सत्यमेव जयते
Ministry of Education
Government of India

हंसराज कॉलेज

(NAAC A+ CGPA 3.62, NIRF Rank #14)

दिल्ली विश्वविद्यालय

महात्मा हंसराज मार्ग, मल्कागंज, दिल्ली – 110007

https://www.hansrajcollege.ac.in

महात्मा हंसराज संकाय संवर्द्धन केन्द्र, हंसराज कॉलेज

(PMMMNMTT के अन्तर्गत शिक्षा मन्त्रालय की पहल)

एवं

संस्कृत विभाग, हंसराज कॉलेज

के संयुक्त तत्त्वावधान में

सप्त-दिवसीय संकाय संवर्द्धन कार्यक्रम

One week Online Faculty Development Programme

(Faculty Development Programme)

योग-परम्परा के माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों का पुनरुत्थान

Resurrection of Cultural Values Through Yoga Traditions

21 – 26 अक्टूबर , 2021 | 1:30 बजे से 5:00 बजे तक

Scan the QR Code

Registration Link:
https://bit.ly/3zHKhdD

@hrcduofficial

ww.mhrfdc.in

fdp.hrc@gmail.com

PMMMNMTT के बारे में

'पंडित मदन मोहन मालवीय नेशनल मिशन ऑन टीचर्स एंड टीचिंग' शिक्षक की भूमिका और कार्य में सृजनात्मक परिवर्तन की आवश्यकता पर बल देता है। यह शिक्षक को सूचना और ज्ञान का प्रसारक मात्र नहीं मानता अपितु सामाजिक एवं भौतिक जगत् में उन्हें सक्रिय बनाकर उनकी अंतर्दृष्टि को विकसित करता है। यह अभिनव शिक्षण पद्धतियों और प्रयोगों से परिचय करा कर उपलब्ध ज्ञान की सीमाओं को विस्तृत करने की क्षमता का आधान करता है।

हंसराज कॉलेज के बारे में

हंसराज कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कॉलेजों में एक प्रतिष्ठित कॉलेज है। विगत दशकों में विभिन्न प्रकार की रैंकिंग में यह साइंस, कॉमर्स और आर्ट्स में शीर्ष पाँच कॉलेजों में शामिल रहा है। कॉलेज की अकादमिक गतिविधियों और उपलब्धियों में कॉलेज के प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों का योगदान उल्लेखनीय रहा है। विद्यार्थियों एवं प्राध्यापकों को अद्यतन बनाए रखने तथा नवाचार को प्रोत्साहित करने हेतु कॉलेज की ओर से निरंतर अनेक प्रकार के कदम उठाए गए हैं।

संगोष्ठी के विषय में

'योग' भारतीय संस्कृति की महत्त्वपूर्ण धरोहर है। यह एक प्राचीन विधा है। आत्मसाक्षात्कार इसका प्रमुख लक्ष्य है। योगसूत्रकार आचार्य पतञ्जलि अपने आप से युक्त होना अर्थात् अपने स्वरूप में स्थिर हो जाने को योग का परिणाम बतलाते हैं - 'तदा द्रष्टु: स्वरूपेऽवस्थानम् '। योग हमें अपने वास्तविक स्वरूप से जोड़ता है।जब हम अपने वास्तविक रूप में नहीं होते हैं तो हम संसार के सुख-दु:ख से समन्वित होते हैं। सुख-दु:ख रूप अन्त:करण के निरोध का नाम ही योग है-'योगश्चित्तवृत्तिनिरोध:'। वस्तुत: आत्मसाक्षात्कार मात्र ही योग का साध्य नहीं है, आत्मोत्कर्ष के साथ इहलोक में तन, मन और आत्मा की शक्तियों का यथोचित समन्वय कर उत्तम चरित्रवान् व्यक्तियों द्वारा आदर्श समाज की रचना करना भी इसका उद्देश्य है। योग के माध्यम से व्यक्ति अपने मन पर नियंत्रण स्थापित कर स्वस्थ शरीर के साथ अपने उत्तरदायित्वों का कुशलता से निर्वाह कर पाता है। योग से जीवन में सहजता, सरलता और आत्मभाव जागृत होता है। योग समस्त प्राणियों में ऐक्य का दर्शन कराता है - 'समत्वं योग उच्यते'।

योग प्राचीन भारतीय परंपरा और संस्कृति की अमूल्य देन है। अनादि काल से योग की परम्परा चली आ रही है। वेदों में योग का वर्णन मिलता है। योग का इतिहास हजारों साल पुराना है। महर्षि पतंजलि के अतिरिक्त अन्य अनेक ऋषियों और आचार्यों की विस्तृत योग – परम्परा रही है। भगवद्गीता में ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग और राजयोग का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त जैनयोग, बौद्धयोग आदि अन्य योग – परम्पराएं भी प्राप्त होती हैं। गुरु-शिष्य परम्परा के द्वारा योग का ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होता रहा है।

योग आध्यात्मिक भारत को जानने और समझने का तरीका है। यह मनुष्य की चेतना के विकास का विज्ञान है। योग में पदार्थ, जीवन और चेतना का समन्वय होता है। यह विज्ञान और अध्यात्म का योग भी कराता है। मूल रूप से योग की शुरूआत मानव मात्र के कल्याण के लिये हुई थी। इसके चमत्कारिक प्रभावों को मेडिकल साइंस भी मान चुका है। आज पूरा विश्व योग से लाभान्वित हो रहा है।

वर्तमान विश्व जिस भौतिकवाद की अन्ध दौड़ में है, उससे समाज में विभिन्न प्रकार की शारीरिक, मानसिक विकृतियां सहज प्रसृत हो रही है। इसके परिणामस्वरूप समाज में मानवीय भावनाओं और संवेदनाओं से व्यक्ति पराङ्मुख होता जा रहा है। सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास इसकी ही परिणति है।

वर्तमान समय में योग अत्यन्त आवश्यक होता जा रहा है। सामाजिक अधोगति से ऊर्ध्वगमन का साधन योग ही है। सांस्कृतिक मूल्यों का पुनरूत्थान योग के माध्यम से ही सम्भव है। "यस्मादृते न सिध्यति यज्ञो विपश्चितश्चन। स धीनां योगमिन्वति।"अर्थात् योग के बिना किसी भी विद्वान् का कोई श्रेष्ठ कर्म सिद्ध नहीं होता। योग व्यक्ति के कर्म मात्र में व्याप्त है।

सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों के उत्थान के लिये योग की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए ही 'योग - परम्परा के माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों का पुनरूत्थान' विषयक इस संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। संगोष्ठी में पातञ्जल योगदर्शन के अतिरिक्त जैनयोग एवं बौद्ध -योग आदि अन्य योग – परम्पराओं पर भी विस्तृत विमर्श किया जायेगा। विश्वास किया जा सकता है कि संगोष्ठी में योगाचार्यों एवं मर्मज्ञ विद्वानों के विशिष्ट व्याख्यान एवं संवाद इन उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होंगे। साथ ही योग के वास्तविक स्वरूप का बोध एवं इसकी विविध परम्पराओं का अवलोकन किया जा सकेगा और इस माध्यम से ज्ञान का संवर्धन हो सकेगा।

पंजीकरण संबंधी विवरण

इच्छुक प्रतिभागी निम्नलिखित निर्देशों के अनुसार संगोष्ठी के लिए अपना पंजीकरण सुनिश्चित कर सकते हैं।

- पंजीकरण के लिए पंजीकरण शुल्क (भारत के प्रतिभागी) : **रुपये 500/-** प्रतिभागी निम्नलिखित खाते में पंजीकरण शुल्क NEFT/IMPS/UPI के माध्यम से जमा कर सकते हैं :

  Account: **Principal, Hansraj College, FDC**
  Bank: **Canara Bank, Hansraj College, Delhi**
  Type of Account: **Savings**
  Account number: **2848101019873**
  IFSC: **CNRB0002848**

- पंजीकरण शुल्क अप्रतिदेय (Non-refundable) है।
- कार्यक्रम में सहभागिता के लिए पूर्व निर्धारित अवधि में ऑनलाइन माध्यम से पंजीकरण अनिवार्य है।
- प्रतिभागी अपना पंजीकरण निम्नलिखित लिंक के माध्यम से करवा सकते हैं। (पंजीकरण फॉर्म भरने से पहले यह सुनिश्चित कर लें कि आपके पास पंजीकरण शुल्क सम्बन्धी प्रूफ है।)
- पंजीकरण के लिए लिंक : **https://bit.ly/3zHKhdD**
- पंजीकरण की अंतिम तिथि : **17 अक्टूबर, 2021**
- सभी प्रतिभागियों को **19 अक्टूबर, 2021** तक सूचित कर दिया जाएगा।
- उपस्थिति सम्बन्धी नियम का पालन आवश्यक है. प्रतिभागी को ई-प्रमाण पत्र प्राप्त करने के लिए मूल्यांकन प्रक्रिया को भी पूरा करना होगा।
- आगे की विस्तृत जानकारी पंजीकृत प्रतिभागियों को दी जाएगी।
- **सहभागिता के लिए योग्यता :** संगोष्ठी अंतर अनुशासनात्मक(Inter –disciplinary) है और सभी इच्छुक प्रतिभागियों के लिए खुला है. किसी भी विश्वविद्यालय या महाविद्यालय के सभी संकाय सदस्य (स्थायी/अस्थायी/अतिथि प्रवक्ता) तथा शोधार्थी सहभागिता के लिए योग्य हैं।

मुख्य अतिथि

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज

अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, कला संकाय,
दिल्ली विश्वविद्यालय एवं निदेशक, गांधी भवन

सारस्वत अतिथि

श्री जयपाल विद्यालंकार

पूर्व उप-प्राचार्य,
हंसराज महाविद्यालय

आयोजन समिति

प्रो. (डॉ.) रमा

प्राचार्या हंसराज कॉलेज एवं
अध्यक्ष, महात्मा हंसराज संकाय संवर्द्धन केन्द्र

संस्कृत विभाग, हंसराज कॉलेज

डॉ. ज्योति भोला

संयोजिका
महात्मा हंसराज संकाय संवर्द्धन केन्द्र

डॉ. सन्ध्या राठौर

FDP संयोजक

श्री आशुतोष यादव

सह संयोजक
महात्मा हंसराज संकाय संवर्द्धन केन्द्र

डॉ. रणजीत कुमार मिश्र

FDP समन्वयक

डॉ. अवनीश कुमार

सदस्य, आयोजन समिति

डॉ. सतीश कुमार मिश्र

सदस्य, आयोजन समिति